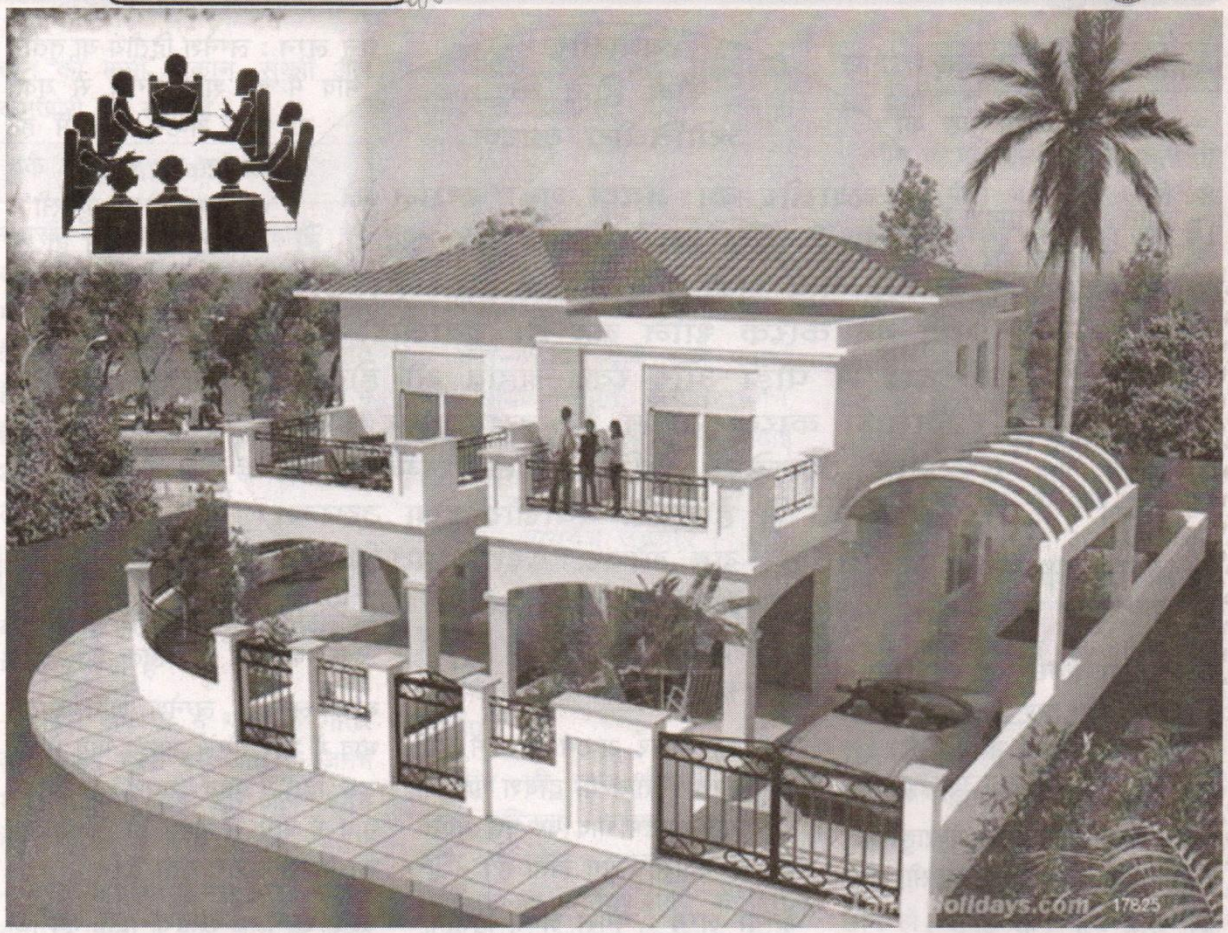

क्या किसी व्यक्ति विशेष के गृह वास्तु से उसकी आर्थिक, पारिवारिक, समृद्धि, स्वास्थ्य, भौतिक संरचना, मानसिक स्थिति, कार्य क्षेत्र तथा संतान सुख आदि के बारे में जाना जा सकता है?

किसी व्यक्ति विशेष के गृह वास्तु निरीक्षण से उसकी और उसके परिवार की स्थिति का काफी हद तक अंदाजा लग जाता है। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार सृष्टि एवं मानव पंचमहाभूत तत्वों (आकाश, वायु, पृथ्वी, जल एवं अग्नि) से बने हैं, उसी प्रकार वास्तु भी इन्हीं तत्वों के परस्पर समन्वय पर आधारित है, अर्थात घर में इन पंच तत्वों का संतुलन होना चाहिये।

शारीरिक, मानसिक और आर्थिक तौर पर सुखी एवं समृद्ध जीवन के लिये घर में सकारात्मक उर्जा प्रवाह में किसी भी प्रकार की रूकावट नहीं होनी चाहिये। रूकावट और संतुलन के अध्ययन के लिये हमें दिशाओं और तत्वों का ध्यान रखना पड़ता है।

इस लेख के विषयानुसार हमें गृह वास्तु से जातक के बारे में जानना है। इसलिये, हम किन दिशाओं में कौन–कौन सी समस्यायें एवं बाधाएं होती हैं उसकी बजाय, समस्याओं के अनुसार वास्तु दोष का वर्णन करने की चेष्टा करते हैं। मुख्य रूप से समस्या शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक ही होती है।

1. शारीरिक

1.1 गृह स्वामी का स्वास्थ्य

अगर गृह स्वामी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है तो निम्न वास्तु दोष होने की सम्भावना है :

मुख्य द्वार वेध है। जैसे, टूटा–फूटा मुख्य द्वार, स्वर वेध एवं द्वार के अन्य वेध।

दक्षिण–पश्चिम (नैर्ऋत्य) दिशा दूषित है जैसे, नैर्ऋत्य कोण का नीचा होना। यह दिशा सदैव ऊँची और मजबूत होनी चाहिये। यह एक गंभीर वास्तु दोष है और गृह स्वामी के लगातार बीमार रहने की आशंका बनी रहती है।

ईशान दूषित है। ईशान दूषित होने से गृह स्वामी के स्वास्थ्य में कमी होती है और सन्तान वंश हानि भी हो सकती है। विशेषतः प्रथम पुत्र के लिये हानिकारक होता है।

1.2 परिवार के अन्य सदस्यों का स्वास्थ्य

अगर परिवार के अन्य सदस्यों का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तो निम्न वास्तु दोष मिलने की सम्भावना है :

आग्नेय वृद्धि है। इस प्रकार के दोष में विशेषतः परिवार की महिलाओं का स्वास्थ्य खराब रहता है।

नैर्ऋत्य दूषित है तो पत्नी का स्वास्थ्य खराब रह सकता है।

उत्तर दिशा दूषित है तो माता का स्वास्थ्य खराब रह सकता है।

दक्षिण दिशा दूषित है तो पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

1.3 बार–बार दुर्घटनाएं

अगर नैर्ऋत्य दिशा दूषित है तो बार–बार दुर्घटनाओं की सम्भावना भी बनी रहती है। इस दिशा का स्वामी राहु है जो एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है।

1.4 संतान हानि

संतान, पारिवारिक परम्पराओं को आगे बढ़ाती है और उसके स्वस्थ रहने से परिवार में चहक और प्रसन्नता बनी रहती है। अगर ईशान या पूर्व दिशा दूषित है तो संतान हानि की सम्भावना रहती है। ईशान दूषित होने की स्थिति में प्रथम पुत्र की स्वास्थ्य हानि की सम्भावना अधिक होती है।

2. मानसिक

2.1 स्वभाव

अगर गृह स्वामी स्वभाव से चिड़चिड़ा, झगड़ालू, क्रोधी, अप्रसन्न और मानसिक रूप से सदैव परेशान रहने वाला लगे तो निम्न वास्तु दोष होने की सम्भावना है :

मुख्य द्वार वेध है।

ब्रह्मस्थान दूषित है। जैसे, उस पर किसी प्रकार का निर्माण है, हैंडपंप है, बीम है, शयन कक्ष है, शौचालय है या कोई भारी सामान रखा है।

2.2 कानून से जुड़ी परेशानियां या अचानक अड़चनें आना

अगर मुख्य द्वार वेध है तो परिवार कानून से सम्बंधित समस्याओं में उलझा ही रहता है या बार–बार कार्य पूर्ण होने में अड़चनें आती हैं।

पश्चिम दिशा के दूषित होने से भी यह समस्या आती है क्योंकि कालपुरुष कुंडली में सप्तम भाव, पश्चिम दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। सप्तम भाव साझेदारी का भी कारक है। अर्थात, साझेदारी एवं व्यवसाय संबंधी कानूनी उलझनें पश्चिम दिशा के दूषित होने से आ सकती हैं।

दिशाओं और तत्वों का संक्षिप्त चित्रांकन निम्न है

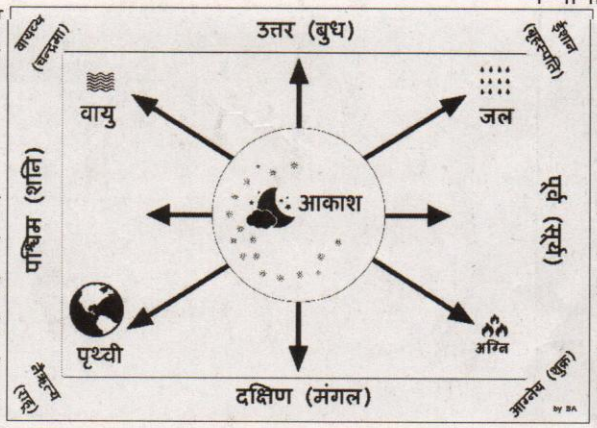

2.3 जिद्दी बच्चे या अध्ययन में कमजोर अगर जातक के घर के बच्चे अध्ययन में कमजोर हैं या जिद्दी हैं, तो निम्न वास्तु दोषों पर ध्यान दें :

दक्षिण–पश्चिम (नैर्ऋत्य) दूषित है तो बच्चे जिद्दी होते है।

ईशान या पूर्व दूषित होने से बच्चे पढ़ाई में कमजोर रहते हैं।

2.4 वैवाहिक कलह

वैवाहिक कलह से जीवन का संपूर्ण संतुलन बिगड़ जाता है। दाम्पत्य के अतिरिक्त परिवार के सभी सदस्य इससे प्रभावित होते हैं। अगर आग्नेय दिशा दोष पूर्ण है तो इसकी सम्भावना अधिक होती है क्योंकि आग्नेय दिशा के प्रतिनिधि ग्रह शुक्र हैं जो वैवाहिक जीवन से सम्बंधित हर सुख पर प्रभाव डालते हैं।

2.5 पारिवारिक तनाव

प्रत्येक परिवार में वैचारिक मतभेद एक सामान्य सी बात है। परन्तु, अगर यह मतभेद लगातार बना रहे तो मानसिक तनाव का रूप ले लेता है। निम्न वास्तु दोष होने से परिवार में मानसिक तनाव होने की सम्भावना अधिक हो जाती है :

मुख्य द्वार वेध या मुख्य द्वार आग्नेय मुखी या नैर्ऋत्य मुखी होना।

रसोई घर में वास्तु दोष हो सकता है। जैसे, गैस का उत्तर–पूर्व या दक्षिण में होना।

दूषित वायव्य भी पारिवारिक कलह का कारण होता है

क्योंकि वायव्य का स्वामी चन्द्रमा, मन का भी कारक होता है।

पश्चिम दूषित होने से (जैसे नीचा है, दरार है इत्यादि) किसी भी कार्य को करने में पूर्ण सफलता नहीं मिलती है और मानसिक तनाव समाप्त नहीं होता ।

2.6 अवज्ञाकारी एवं अनुशासनहीन नौकर

कई घरों के नौकर, गृह स्वामी की आज्ञा का पालन नहीं करते या फिर अत्यन्त रूखे अंदाज में बात करते दिखते हैं। ऐसे में निम्न वास्तु दोष होने की सम्भावना होती है :

नैर्ऋत्य दिशा, जो पृथ्वी तत्व यानी स्थायित्व की द्योतक है, दूषित है। हो सकता है नौकर के रहने का कमरा नैर्ऋत्य में दे दिया गया हो।

पश्चिम मुखी (द्वार–ग्रिड से बाहर) घर में भी इस प्रकार की समस्या हो सकती है।

2.7 लड़की की शादी में देरी होना

शादी जीवन का एक महत्वपूर्ण संस्कार है। प्रत्येक माता–पिता चाहते हैं कि उनकी संतान की योग्य उम्र में शादी हो जाये। अगर किसी योग्य कन्या की शादी में देरी हो रही है तो निम्न वास्तु दोष उसका कारण हो सकता है :

कन्या का शयन कक्ष दक्षिण–पश्चिम (नैर्ऋत्य) में है। यह स्थिरता दर्शाता है। विवाह योग्य कन्या के शयन कक्ष का उपयुक्त स्थान वायव्य कोण है।

मुख्य द्वार के दक्षिण मुखी (द्वार–ग्रिड से बाहर) होने से भी इस प्रकार की बाधा आ सकती है।

3. आर्थिक

आर्थिक परेशानियाँ अनेकों प्रकार की हो सकती हैं। उनमें से कुछ की चर्चा करते हैं।

3.1 खर्चा अधिक होना

कई बार ऐसी परिस्थितियां होती हैं जिनमें घर का खर्चा अपेक्षा से कहीं अधिक हो जाता है और भरसक प्रयत्न के बावजूद खर्चा काबू में नहीं आ पाता है। ऐसी स्थिति में अधिकतर रसोई घर में वास्तु दोष पाया जाता है।

3.2 बार–बार चोरी होना या मृत्यु होना

अगर, पर्याप्त सुरक्षा के बावजूद घर में बार–बार छोटी या बड़ी चोरियां हो रही हैं या अचानक परिवार के सदस्य की मृत्यु हो गयी है तो, ऐसी स्थिति में अधिकतर नैर्ऋत्य दूषित पाया जाता है या फिर मुख्य द्वार दक्षिण मुखी (द्वार–ग्रिड से बाहर) होता है। दक्षिण पर यम का स्वामित्व है और इस कारण से अशुभ प्रभाव मिलते हैं।

3.3 मेहनत के बावजूद फल न मिलना

अगर गृह स्वामी भरपूर कोशिश और मेहनत के बाद भी पैसे के लिये सदैव संघर्ष करता हुआ प्रतीत हो तो निम्न वास्तु दोषों पर ध्यान देना चाहिये :

ब्रह्मास्थान दूषित है। इसमें व्यक्ति अधिक मेहनत के बावजूद फटेहाल रहता है क्योंकि जातक को दो वक्त की रोटी कमाने के लिये कोल्हू के बैल की तरह काम करना पड़ता है।

दक्षिण–पश्चिम (नैर्ऋत्य) दिशा दूषित है। इस कारणवश, गृह स्वामी कार्य के सिलसिले से अधिकतर घर के बाहर ही रहता है और सफलता के लिये संघर्ष करता रहता है।

ईशान दूषित है। दूषित ईशान, व्यापार को न्यूनतम स्तर तक ले आता है।

मई माह के ज्योतिष मर्मज्ञ

विचार-गोष्ठी में भाग लें और 'ज्योतिष मर्मज्ञ' सम्मान एवं पुरस्कार पाएं।

ज्योतिष मर्मज्ञ

डॉ. सुशील अग्रवाल – बी–301, सोम अपार्टमेंट्स, सेक्टर–6, प्लॉट–24, द्वारका, नयी दिल्ली–110075 दूरभाष : 9810162371